एक शक्तिशाली भारत की ओर..

स्वदेशी उत्पाद बनाने कि विधि

भाग - 2

बिना केमिकल उत्पाद

स्वावलम्बी बने और स्वदेशी की ओर चले....

श्री राजीव दीक्षित जी

इस पुस्तिका के लिखने के पीछे उद्देश्य यह रहा है कि लोग अपनी जरूरत की अधिकांश वस्तुएं अपने घर में ही बना सकें या चाहें तो थोड़ी सी पूँजी लगाकर अपना उद्योग-धन्धा शुरू कर सकें और स्वावलंबी बनें। मेरी उत्कृष्ट इच्छा है कि भारत की धरती से बहुराष्ट्रीय कंपनियों का साम्राज्य नेस्तनाबूद हो और यह देश स्वावलंबी और उद्योगी राष्ट्र बनकर एक बार फिर से सारे संसार का सरताज बने। परंतु यह तभी हो सकता है जबकि हम लोग विदेशी सामानों के मोहपाश से छूटकर अपने जीवन में स्वदेशी अपनाने का संकल्प धारण करें।

आज इस देश में बेरोजगारों की एक विशालकाय फौज खड़ी हो गई है। यह हरकत में आएगी तो देश का ही विनाश करेगी। सरकारों के पास इस समस्या का कोई समाधान नहीं है। वे समाधान के प्रति ईमानदार भी नहीं हैं, क्योंकि बेरोजगारी जैसे मुद्दे के सहारे उनकी राजनीति सधती है। ऐसे में देश के बेरोजगार युवकों से मेरी अपील यही है कि वे नौकरियों के पीछ बहुत समय न गँवाते हुए स्वदेशी उद्योग-धन्धे खड़े करने के काम में लगें तो उनका और राष्ट्र, दोनों का भला होगा। इस देश में स्वावलम्बन की अपार संभावनाएं हैं। प्राकृतिक संसाधनों की भरभार है व पेड़-पौधों, जीव-जन्तुओं, फसलों की विविधताएं है, खनिज संसाधन है, काम करने वाले अनगिनत हाथ है, और असली बात यह है कि हमारे देश में प्रतिभा है। जरूरत सिर्फ दृढ़ संकल्प जगाने की है, हम बहुत कुछ कर सकते है। सचमुच आज देश में स्वदेशी व्यवस्था कायम करने की महती आवश्यकता है, अन्यथा, बहुराष्ट्रीय कंपनियों की खतरनाक किस्म की आर्थिक गुलामी से हम बच नहीं पाएंगे।

❖ सुखड़ी

घटक –

1. गेहूँ का आटा - 1 किलो
2. गुड़ - 500 ग्राम
3. घी - 500 ग्राम
4. गोंद - 500 ग्राम
5. सोप - 20 ग्राम

विधि –

- गेहूँ का आटा और घी कढ़ाई में डालें
- बदामी रंग होने पर गुड़ डाले , मिक्स होने दे।
- गोंद डाल के हिलायें, उतार के थाली में ढ़ाल दों, ऊपर सोप डाल दो।

❖ मोहनथाण

घटक -

1. चने का आटा(बेसन) - 1 किलो
2. घी देशी गाय का - 700 ग्राम
3. चारोली - 50 ग्राम
4. शक्कर - 1 किलो
5. दूध - 200 ग्राम

विधि –

बेसन को धीमे आँच पर डालकर हिलाये, बादामी रंग होने पर उतार लीजिए, शक्कर में गीला होने तक पानी डालिए, ताकी चासनी बनजाये, आटा डालके उतार लीजिए, थाली में ढ़ाल दो, ऊपर चारोली छीटक दो।

❖ मुखवास गोली

घटक -

1. अमचूर पाउडर - 100 ग्राम
2. शहद - 50 ग्राम
3. काली मिर्च पाउडर - 20 ग्राम
4. नमक पाउडर - 20 ग्राम
5. आंवला पाउडर - 50 ग्राम

विधि –

सबको मिला कर आटा गूँठ लें, गौपूजन गोली मशीन से गोली बनाले बोतल या पाउच में भर लें।

❖ गौमूत्र धनवटी

घटक -

1. अर्क बनाने के बाद या धन - 100 ग्राम
2. त्रिफला चूर्ण - आवश्यक

विधि –

- दोनो मिला के गोली बनाने लायक आटा तैयार करों,
- गौपूजन धनवटी मशीन से निकालकर गोली तैयार कर लों, धूप में सुखाले – 1 दिन, बोतल में भर लें।

❖ VIT B12 (पानी के लिए)

घटक -

1. गोबर भस्म - 1 किलो

2. सुंगधी वाणी(मूल) - 20 ग्राम
3. नागर मोथा पाउडर - 20 ग्राम

विधि - 10 ग्राम का कपड़े का पाउच बना लें, आरओं पानी में हर दीन पाउच डालने से मानव शरीर को जरूरी **B12** और 18 तत्वों की कमी की पूर्ति हो जाती हैं और पानी स्वदिष्ट बनता हैं।

❖ माउथ फ्रेशनर

घटक -

1. गौमूत्र अर्क - 100 ग्राम
2. पानी - 1 लीटर
3. अमृतधारा - 10 ग्राम

विधि -

तीनो को अच्छे से मिला कर, ये मुहँ की गंध दांत का दर्द, दूर करने के लिए मुहँ में भरके रखे और पेट में जाने दे, कफ और पेट दर्द में लाभ।

❖ गौ – तक्रारिष्ट

घटक -

1. गाय की लस्सी - **1** लीटर
2. हल्दी चूर्ण - **50** ग्राम
3. राई का चूर्ण - **50** ग्राम
4. सेंधा नमक - **50** ग्राम
5. कांच का बर्तन - 1
6. पानी - **1** लीटर

विधि –

- गाय की लस्सी में समान मात्रा में पानी मिलाकर बाकी सभी चीजों को इसके अंदर मिला ले ओर किसी कांच के बर्तन में चार दिन के लिए रख दे,चार दिन बाद किसी सूती कपड़े से छानकर बोतलों में डालकर रख दे।
- बवासीर के लिए हर सूरत में फायदेमंद है।इसके निरंतर सेवन से बवासीर (**piles)** में अत्यधिक फायदा होता है।हमने बहुत से बवासीर के मरीजो को इसका सेवन करने को कहा था और उनको इससे बेहद फायदा पंहुचा है ।

❖ <u>वैदिक दंतमंजन</u>

घटक: -

1. गोमय भस्म - 100 ग्राम
2. फिटकरी - 50 ग्राम
3. गेरु - 50 ग्राम
4. लौंग - 20 ग्राम
5. काली मिर्च - 10 ग्राम
6. त्रिफला - 50 ग्राम
7. नीम+जामुन पत्ते की भस्म - 20 ग्राम
8. सेंधा नमक - 50 ग्राम
9. हल्दी - 30 ग्राम

विधि –

- कपड़े से छान कर डब्बी में भर लें।
- वैदिक टूथपेस्ट बनाने के लिए उपरोक्त विधि के पाउडर में सरसों का तेल मिला लें।

❖ हर्बल (लाल) दंतमंजन

घटक: -

1.	गेरु	-	500 ग्राम
2.	फिटकरी	-	15 ग्राम
3.	दालचीनी	-	15 ग्राम
4.	पिपरमेंट	-	10 ग्राम
5.	सेंधा नमक	-	15 ग्राम
6.	काली मिर्च	-	10 ग्राम
7.	लौंग	-	10 ग्राम
8.	इलायची	-	5 नग
9.	कपूर	-	2 ग्राम
10.	गौमूत्र	-	100 ग्राम
11.	गोबर भस्म	-	100 ग्राम

विधि –

- फिटकरी को गर्म तवे पर भूने
- सभी चीजों का अलग पाउडर बना दें, मिक्स कर, बोतल में पैक कर दें।

❖ दिव्य गैसहर चूर्ण के घटक

घटक: -

1.	अजवायन	-	30 ग्राम
2.	मिर्च काली	-	10 ग्राम
3.	काला नमक	-	10 ग्राम
4.	हरड छोटी	-	20 ग्राम
5.	जीरा	-	15 ग्राम
6.	मीठा सोडा	-	5 ग्राम

7. नीम्बुसत - 3 ग्राम
8. हींग शुद्ध - 2 ग्राम

विधि – सूखा कर, कूट कर बारीक पाउडर बना कर, शीशी में भर लें।

गैसहर चूर्ण लाभ एवं उपयोग

- दिव्य गैसहर चूर्ण भोजन की पचाने में सहायक हैं सहायता करता हैं इसे बनाया ही इसी के लिए गया हैं, इसका मतलव यह हैं की यह चूर्ण एसिडिटी और ह्रदय में जलन जैसी बिमारियों की रोकथाम करने में भी बहुत उपयोगी हैं।
- दिव्य गैसहर चूर्ण ऐसी जड़ी-बूटियों से बनाया गया हैं जो कब्ज और दस्त दोनों की रोकथाम के लिए सबसे अच्छी आयुर्वेदिक औषधि हैं।
- यह पाचन शक्ति को बढ़ाने के लिए उपयोगी हैं और भोजन को पचाने में मदद करता हैं जिससे की गैस जैसी बीमारी से मुक्ति मिलती हैं।
- दिव्य गैसहर चूर्ण पेट में गैस नही बनने देता जिससे पेट में भारीपन नही रहता और पेट साफ़ रहता हैं।
- इन बिमारियों के अलावा दिव्य गैसहर चूर्ण अम्लता, पेट दर्द और पेट से सम्बंधित बिकारो को भी दूर करता हैं। इसके नियमित रूप से सेवन करने से पेट से सम्बंधित सब रोग दूर होते हैं।

❖ पेट सफा

घटक: -

1. सनाय की पत्तियाँ - 35 ग्राम
2. काला नमक - 12 ग्राम
3. अजवाइन - 10 ग्राम
4. इसबगोल - 8 ग्राम
5. त्रिफला चूर्ण (हरड़, बहेड़ा, आँवला) - 9 ग्राम

6. सेंधा नमक - 5 ग्राम
7. हरीतकी - 3 ग्राम
8. अमलतास का गूदा - 3 ग्राम
9. सौंफ - 3 ग्राम
10. सोंठ - 3 ग्राम
11. निशोथ (त्रिवृत) - 2.8 ग्राम
12. जीरा - 2 ग्राम
13. एरंड का तेल (अरण्डी का तेल) - 1 ग्राम

विधि –

सबको सुखाकर, पीसकर आपस में मिलाकर डिब्बी में भर लें।

पेट सफा में निम्नलिखित औषधीय गुण है:

- रेचक (उत्तेजक)
- क्षुधावर्धक – भूख बढ़ाने वाला
- पाचन – पाचन शक्ति बढाने वाली
- अनुलोमन – उदर से मल और गैस को बाहर निकालने वाला
- दीपन – जठराग्नि को प्रदिप्त करता है।

❖ शिलाजीत रसायन वटी

घटक: -

1. अश्वगंधा - 60 मिलीग्राम
2. त्रिफला चूर्ण - 60 मिलीग्राम
3. भूमि आमला - 60 मिलीग्राम
4. शुद्ध शिलाजीत - 120 मिलीग्राम

विधि –

सभी सामग्री को आपस में कूटकर मिलाकर डिब्बी में भर लों। दिन में 2 बार गर्म पानी या दूध से लें।

औषधीय लाभ एवं प्रयोग

दिव्य शिलाजीत रसायन वटी के सभी घटकों का प्रभाव मर्दाना रोगों में दिखाई पड़ता है। यह शारीरिक कमजोरी को दूर करती है। यह पुरुषों नई ऊर्जा का संचार करती है और मर्दाना शक्ति की वृधि करती है। यह पुरुषों के स्वास्थ्य के उपयोगी व हितकारी आयुर्वेडिक औषधि है। मर्दाना कमजोरी, अल्पशुक्राणुता (वीर्य में शुक्राणुओं की कमी होना), स्वप्नदोष आदि रोगो को छुटकारा मिलता हैं।

❖ आयुर्वेदिक देशी गुटखा

सुपारी के टुकड़े 50 ग्राम, तुलसी, कत्था मिक्स करों, अडूसी और नागरवेल पत्ते का 5 ग्राम रस निकालों 5 ग्राम दाल चीनी, लविंग, ओलची, 1 चम्मच गौमूत्र अर्क सब मिक्स कर, पैक कर लें।

❖ मुक्ता वटी के घटक

घटक: -

1. ब्राह्मी - 46 मिली ग्राम
2. शंखपुष्पी - 46 मिली ग्राम
3. वच - 46 मिली ग्राम
4. गाजवाँ - 69 मिली ग्राम
5. ज्योतिष्मती - 19 मिली ग्राम
6. गिलोय या गुडूची - 20 मिली ग्राम
7. अश्वगंधा - 46 मिली ग्राम
8. मुक्ता पिष्टी (मोती पिष्टी) – 2 मिली ग्राम
9. प्रवाल पिष्टी - 6 मिली ग्राम

विधि- उपरोक्त सामग्री के मिश्रण को आगे दी गयी जड़ी बूटियों से तैयार किए हुए काढ़े के साथ संसाधित किया जाता है। ब्राह्मी, शंखपुष्पी, गिलोय या गुडूची, सर्पगंधा और जटामांसी। 1 गोली प्रतिदिन दो बार।

लाभ -

दिव्य मुक्ता वटी उच्च रक्तचाप को संतुलित करने की सबसे अच्छी आयुर्वेदिक औषधि हैं। मुक्ता वटी अवसाद में भी लाभदायक है और यह मानसिक उत्तेजना और चिड़चिड़ेपन को शांत करती है। ज्यादातर लोग तनाव से प्रेरित उच्च रक्तचाप से ग्रसित होते हैं। इस मामले में यह अधिक प्रभावी है। हालांकि**,** मुक्ता वटी को सर्पगंधा और जटामांसी के साथ भी संसाधित किया जाता है**,** जो की एंटीहाइपरटेन्सिव (उच्चरक्तदाबरोधी) जड़ी बूटियां हैं।

❖ वातारि चूर्ण

घटक: -

1. सोंठ - 1 ग्राम
2. विधारा - 1 ग्राम
3. अश्वगंधा - 1 ग्राम
4. मेथी - 1 ग्राम
5. कुटकी - 1 ग्राम

विधि –

सभी घटकों को कूटकर, मिलाकर तैयार करें।

वातारि चूर्ण के लाभ एवं उपयोग

- दिव्य वातारि चूर्ण जोड़ो और माशपेशियों के दर्द के लिए बहुत ही लाभकारी हैं यह बाजार में उपलब्ध उन कुछ औषधियों में से एक हैं जो गठिये का बेहतरीन उपचार करती हैं और गठिये के रोगियों

को सामान्य जीवन जीने के लिए मदद करते हैं। इससे जोड़ो के अन्य रोगों में भी रहत मिलती हैं।

- कई महिलायो को रजोनिवृत्ति के बाद ऑस्टियोपोरोसिस जैसी बीमारी हो जाती हैं जिसमे भी जोड़ो में समस्या आ जाती हैं, दिव्य वातारि चूर्ण इस समस्या की रोगथाम के लिए भी बहुत उपयोगी हैं।
- दिव्य वातारि चूर्ण उन बूढ़े लोगो के लिए उपयोगी हैं जो ठीक से चल पाने में भी असमर्थ हैं क्योंकि उम्र बढ़ने के कारण उनके जोड़ कमजोर हो चुके होते हैं। यह चूर्ण हड्डियों और जोड़ो को मजबूत बनाता हैं, ताकि वो अपने सामान्य काम कर सके।
- दिव्य वातारि चूर्ण जोड़ो तक पोषक तत्व पहुंचाता हैं जिससे इससे सम्बंधित समस्याएं न केवल कम होती हैं बल्कि शरीर को भी ऊर्जा मिलती हैं।
- इन सब फायदों के अलावा यह चूर्ण शरीर के अन्य दर्दो जैसे कमर दर्द, पीठ कर दर्द और सभी तरह से वात रोगों से छुटकारा भी दिलाता हैं।

❖ दिव्य पेय हर्बल टी के घटक

घटक: -

1. छोटी इलाइची - 3 ग्राम
2. बड़ी इलाइची - 4 ग्राम
3. दालचीनी - 1 ग्राम
4. लौंग - 4 ग्राम
5. सफेद चन्दन - 1 ग्राम
6. रक्त चन्दन - 3 ग्राम
7. जावित्री - 4 ग्राम
8. जायफल - 4 ग्राम
9. काली मिर्च - 1 ग्राम
10. गुलाब फूल - 3 ग्राम
11. कमल फूल - 3 ग्राम

12.	अश्वगंधा	-	3 ग्राम
13.	सोमलता	-	3 ग्राम
14.	गजवान	-	2 ग्राम
15.	सौंफ	-	2 ग्राम
16.	चित्रक	-	3 ग्राम
17.	वासा	-	3 ग्राम
18.	बनफ्शा	-	3 ग्राम
19.	चव्य	-	3 ग्राम
20.	सोंठ	-	3 ग्राम
21.	गिलोय	-	3 ग्राम
22.	मुलेठी	-	3 ग्राम
23.	तेज़पत्ता	-	2 ग्राम
24.	गोरखपान	-	2 ग्राम
25.	आज्ञाघास	-	4 ग्राम
26.	भूमिआमला	-	4 ग्राम
27.	पुनर्नवा	-	4 ग्राम
28.	बला	-	2 ग्राम
29.	सर्पुनखा	-	2 ग्राम
30.	व्राह्मी	-	4 ग्राम
31.	शंखपुष्पी	-	4 ग्राम
32.	वनतुलसी	-	5 ग्राम
33.	अर्जुन	-	3 ग्राम

विधि-

इसको बनाने का तरीका साधारण चाय बनाने के जैसा ही हैं। एक कप पानी में एक टीस्पून दिव्य पेय हर्बल टी का एक चम्मच डाल कर इसे धीमी आंच पर पकाएं**,** इसे पांच से सात मिनट्स पकाएं और इसके बाद इसमें दूध और चीनी डालें और उसके बाद छान कर पिएं।

दिव्य पेय के लाभ एवं उपयोग -

- खासी-जुकाम में लाभदायक

- दिव्य पेय हर्बल टी जड़ी-बूटियों का एक ऐसा मिश्रण हैं,जो खासी जुकाम और उसमे होने वाली परेशानियों को दूर करने में सहायक हैं ।
- पेट के रोगों में असरकारक
- यह एक ऐसा पेय हैं जो पेट की तकलीफो से राहत प्रदान करती हैं और उनकी रोकथाम में सहायक हैं।
- पाचन की समस्यायों से राहत
- इस हर्बल चाय से पाचन क्षमता बढ़ती है, इसके अलावा यह साँस से सम्बंधित समस्यायों को भी दूर करती हैं।
- वजन कम करने के लिए उपयोगी
- इसके मौजूद जड़ी- बूटियां शरीर की चर्बी को कम करती हैं और वजन को कम करने में उपयोगी हैं
- मानसिक परेशानियों के लिए उपयोगी
- इस चाय में अश्वगंधा ,व्राह्मी और शंखपुष्पी जैसी जड़ी-बूटियां हैं जो मानसिक बीमारियों, तनाव व अवसाद को दूर करती हैं और व्यक्ति को स्वस्थ रखती हैं ।
- इम्युनिटी बढाती हैं
- हर्बल चाय इम्युनिटी को बढाती हैं और शरीर के अंगो को भी मजबूत करती हैं। यह शरीर से हानिकारक ऑक्सीडेंट को शरीर से निकालती हैं।

❖ यौवनामृत वटी

घटक: -

1. अश्वगंधा - 12 मिलीग्राम
2. कोंच - 12 मिलीग्राम
3. बला - 12 मिलीग्राम
4. शतावर - 8.25 मिलीग्राम
5. सफ़ेद मूसली - 12 मिलीग्राम
6. जावित्री - 12 मिलीग्राम

7.	जायफल	-	17.50 मिलीग्राम
8.	कुचला शुद्ध	-	2 मिलीग्राम
9.	अकरकरा	-	12 मिलीग्राम
10.	जुंदवेस्तर	-	12 मिलीग्राम
11.	बबूल	-	1.75 मिलीग्राम
12.	स्वर्ण भस्म	-	0.25 मिलीग्राम
13.	प्रवाल पिस्टी	-	0.25 मिलीग्राम
14.	वंग भस्म	-	5.50 मिलीग्राम
15.	शिलाजीत शुद्ध	-	5.50 मिलीग्राम

विधि –

सभी सामग्री को सुखाकर, कूटकर डिब्बे में भर लें।

लाभ एवं प्रयोग -

दिव्य यौवनामृत वटी में सभी घटकों का पुरुषों के यौन स्वास्थ्य पर प्रभाव पड़ता है।

❖ अर्जुन क्वाथ

1. अर्जुन छाल - 10 ग्राम

विधि – 400 मिलीलीटर पानी में पाँच से दस ग्राम दिव्य अर्जुन क्वाथ पाउडर डालें और उसे पकाएं**,** इसे तब तक पकाएं जब तक की इस मिश्रण की मात्रा कम हो कर 100 मिलीलीटर न रह जाये। अब इस मिश्रण को छान लें और पिये। इसका सेवन दिन में दो बार खाली पेट करना चाहिए। 1) सुबह उठ कर खाली पेट 2) रात के खाने से एक घंटे पहले।

ह्रदय से सम्बंधित रोगों के लिए

- ह्रदय के रोगों जैसे उच्च कोलोस्ट्रोल**,** उच्च रक्तचाप और हार्ट अटैक की रोकथाम के लिए दिव्य अर्जुन क्वाथ बेहतरीन औषधि

हैं इसके अलावा इसमें मौजूद जड़ी-बूटियां ह्रदय की माँसपेशियों का पोषण करता हैं ताकि वो सही से काम कर सके।

- कमजोर दिल के लिए
- कमजोर दिल के रोगियों के लिए यह औषधि बहुत लाभदायक हैं।
- हार्ट अटैक की रोकथाम के लिए
- दिव्य अर्जुन क्वाथ धमनियों में जमी वसा को कम करने में मदद करता हैं जिससे हार्ट अटैक की संभावना कम हो जाती हैं।
- इन सब लाभो के अलावा इसमें मौजूद अर्जुन छाल किडनी से पथरी को बाहर निकालने**,** दांतो को चमकाने या मजबूत बनाने और अगर इसका सेवन दूध में डाल कर किया जाये तो लगभग हर बीमारी में यह लाभदायक हैं।

❖ दिव्य उदरकल्प चूर्ण

घटक –

2. सोनामुखी - 1.5 ग्राम
3. सौंफ - 0.5 ग्राम
4. हरीतकी छोटी - 1 ग्राम
5. सेंधा नमक - 0.5 ग्राम
6. सोंठ - 0.5 ग्राम
7. गुलाब फूल - 0.5 ग्राम
8. काला दाना - 0.5 ग्राम

विधि –

सभी घटकों को सुखाकर पीसकर, डिब्बी में भरे।

लाभ एवं उपयोग -

- दिव्य उदरकल्प चूर्ण आंतो से सम्बंधित रोगों को दूर करने में सहायक हैं। इसका नियमित रूप से सेवन करने से आंतरिक

प्रणाली से गंदगी बाहर निकलती हैं और इससे खाना पूरी तरह से पच जाता हैं।

- दिव्य उदरकल्प चूर्ण पेट से सम्बंधित रोगों की रोकथाम के लिए बहुत उपयोगी हैं जैसे पेट में होने वाले दर्द से और पेट की गैस को यह चूर्ण पूरी तरह से ख़त्म करता हैं।
- यह चूर्ण पेट की सूजन को कम करता हैं और शरीर के सारे अंगो को ऊर्जा प्रदान करता हैं इसके अलावा यह शरीर की पाचन क्रिया को भी सुचारू बनाये रखता हैं।
- दिव्य उदरकल्प चूर्ण कुदरती तरीके से शरीर की प्रणाली की सफाई करता हैं और शरीर के लिए हानिकारक द्रव्यों को बाहर निकालता हैं, वो भी शरीर के बाकि के अंगो को बिना हानि पहुचाये।
- दिव्य उदरकल्प चूर्ण पुरानी कब्ज और बबासीर जैसे रोगों के लिए भी बहुत ही उपयोगी औषधि हैं। इसमें मौजूद जड़ी-बूटियां इन रोगों के लिए रामबाण दवा हैं।
- यह चूर्ण दस्त,पेट फूलना ,एसिडिटी ,खट्टी डकार जैसी बिमारियों से भी राहत प्रदान करता हैं।

औषधीय मात्रा निर्धारण एवं व्यवस्था

दिव्य उदरकल्प चूर्ण की दो-पाँच ग्राम मात्रा रोजाना लेने की सलाह दी जाती हैं। इसे दिन में एक बार रात को सोते समय लेना चाहिए। इस चूर्ण का सेवन हलके गर्म दूध या पानी किसी के साथ भी लेना बेहतर हैं। इसका सेवन आप कितने भी लंबे समय तक कर सकते हैं क्योंकि इसका कोई दुष्प्रभाव नही होता।

❖ शिलाजीत रसायन वटी

घटक: -

1. अश्वगंधा - 60 मिलीग्राम
2. त्रिफला चूर्ण - 60 मिलीग्राम

3. भूमि आमला - 60 मिलीग्राम
4. शुद्ध शिलाजीत - 120 मिलीग्राम

विधि –

सभी घटको को सुखाकर, पीसकर तैयार करें।

औषधीय लाभ एवं प्रयोग (Benefits & Uses) -

दिव्य शिलाजीत रसायन वटी के सभी घटकों का प्रभाव मर्दाना रोगों में दिखाई पड़ता है। यह शारीरिक कमजोरी को दूर करती है। यह पुरुषों नई ऊर्जा का संचार करती है और मर्दाना शक्ति की वृधि करती है। यह पुरुषों के स्वास्थ्य के उपयोगी व हितकारी आयुर्वेडिक औषधि है। यह पुरुषों के रोगों के उपचार के लिए एक प्रसिद्ध आयुर्वेदिक औषधि है।

सेवन विधि

- दवा लेने का उचित समय (कब लें**?)** - सुबह और शाम
- दिन में कितनी बार लें**?** - 2 बार
- अनुपान - गुनगुने पानी या दूध के साथ
- उपचार की अवधि (कितने समय तक लें)कम से कम 3 महीने चिकित्सक की सलाह लें

❖ Dr Ortho Oil के घटक द्रव्य (Ingredients)

घटक: -

1. अलसी तेल - 5 मिलीलीटर
2. कपूर तेल - 5 मिलीलीटर
3. पुदीना तेल - 5 मिलीलीटर
4. चीड़ तेल - 8 मिलीलीटर
5. गंधपुरा तेल - 8 मिलीलीटर

6. निर्गुन्डी तेल - 2 मिलीलीटर
7. ज्योतिष्मती तेल - 2 मिलीलीटर
8. तिल का तेल - 65 मिलीलीटर

विधि- सभी प्रकार के तेलों को आपस में मिलाकर डिब्बी में भर कर प्रयोग करें।

डा. ऑर्थो तेल (Dr Ortho Oil) की मालिश निम्नलिखित व्याधियों में लाभकारी है:

- घुटने का दर्द
- पीठ दर्द
- मांसपेशियों में दर्द और जकड़न
- जोड़ों के दर्द और जकड़न
- ऑस्टियोआर्थराइटिस (अस्थिसंधिशोथ)
- गठिया
- कंधे में दर्द
- गृध्रसी या कटिस्नायुशूल (**Sciatica)**
- गर्दन का दर्द

❖ दिव्य धारा के घटक

घटक: -

1. पिपरमिंट आयल - 1मिलीलीटर
2. देसी कपूर - 1 ग्राम
3. अजवायन सत - 1 ग्राम
4. लौंग तेल - 0.50 मिलीलीटर
5. नीलगिरी तेल - 1.50 मिलीलीटर

विधि -

सभी को आपस में मिलाकर, दिव्य धारा तैयार करें।

दिव्य धारा के लाभ एवं प्रयोग

दिव्य धारा में सभी घटकों का सिर दर्द,खाँसी या जुकाम पर प्रभाव पड़ता है। प्रत्येक घटक के प्रभाव का प्रदर्शन करने के लिए यहाँ कुछ महत्वपूर्ण लाभ लिखे हैं।

- दिव्य धारा शरीर के विभिन्न दर्द जैसे सिर का दर्द, दांत का दर्द, पेट का दर्द को दूर करने में सहायक हैं, इसके अलावा यह नाक से खून निकलने की समस्या और त्वचा की किसी भी तरह की समस्या जैसे की संक्रमण से यह राहत देती हैं। यह औषधि माइग्रेन के लिए भी लाभदायक हैं।
- दिव्य धारा का मुख्य घटक पुदीना हैं इसीलिए यह पेट से सम्बंधित सभी रोगों को रोकथाम के लिए बहुत असरदार हैं। इसके प्रयोग से पेट दर्द , कब्ज ,पेट का भारीपन, अम्लता, गैस में राहत मिलती हैं और पाचन क्रिया सही रहती हैं। यह पाचन शक्ति को बढाती हैं और अपच नही होने देती। दिव्य धारा का प्रयोग बाहरी तरीके से ही किया जाता हैं।
- दिव्य धारा सर्दी जुकाम और खाँसी में भी राहत देती हैं। जुकाम में होने वाली समस्याओ जैसे सिर दर्द, गले की खराश और दर्द, बहती हुई नाक, संक्रमण, आँखों में जलन आदि को दूर करने में भी सहायक हैं। मांसपेशियों के दर्द में भी दिव्य धारा के प्रयोग से लाभ मिलता हैं और मासपेशियों की अकडन में भी इसका प्रयोग किया जा सकता हैं।
- दिव्य धारा हैजा और पुराने अस्थमा जैसे रोगों की रोकथाम के लिए असरदार हैं। दमा या साँस लेने में मुश्किल होने की समस्या में भी इस औषधि का प्रयोग किया जा सकता हैं। तनाव और दिमागी कमजोरी की स्तिथि में भी दिव्य धारा के इस्तेमाल से अच्छे परिणाम मिलते हैं।

❖ तुलसी घनवटी

घटक -

1. तुलसी के पत्ते

विधि –

- तुलसी के पत्ते को अग्नि को औटाकर उसका घन बनाया जाता हैं। घन से आधे-आधे ग्राम की या देशी चने के आकार की गोलियाँ बनाई जाती हैं।
- प्रत्येक तुलसी घनवटी की गोली में 500 मिलीग्राम तुलसी का घन शामिल हैं।

तुलसी घनवटी लाभ एवं उपयोग

- तुलसी पुराने पेट के संक्रमण के उपचार के लिए एक अद्भुत जड़ी-ब्यूटी हैं। यह एक ठंडी औषधि हैं जो पेट के दर्द से भी राहत प्रदान करती हैं।
- यह औषधि इम्युनिटी बढाती हैं और सांस की बीमारियों जैसे अस्थमा और कफ की बिमारियों की रोकथाम करती हैं।
- बच्चो का इम्यून सिस्टम बहुत कमजोर होता हैं इसलिए बच्चे बहुत जल्दी सर्दी**,** खांसी और निमोनिया जैसी बिमारियों का शिकार बन जाते हैं ऐसे में दिव्य तुलसी घनवटी कुदरती तरीके से इन बीमारियों को ठीक करती हैं और पुरे उम्र के लिए बच्चो को निरोगी बनाता हैं।
- दिव्य तुलसी घनवटी शरीर को शक्ति और ऊर्जा प्रदान करती हैं**,** यह औषधि फेफड़ों में खून की पूर्ति करती हैं और संक्रमण से बचाती हैं।
- दिव्य तुलसी घनवटी खून को साफ करती हैं और त्वचा को भी निखारती हैं इसके अलावा यह औषधि बुखार और जलन से भी राहत देती हैं।

- दिव्य तुलसी घनवटी पुरानी से पुरानी खांसी और बुखार की रोकथाम करने में बहुत ही मददगार हैं और यह बिना किसी दुष्प्रभाव के इन रोगों को दूर करता हैं।

❖ एडी से चोटी तक शरीर की ब्लॉक नसों को खोले –

घटक: -

2.	दाल चीनी	-	1 ग्राम
3.	काली मिर्च साबुत	-	10 ग्राम
4.	तेज पत्ता	-	10 ग्राम
5.	मगज	-	10 ग्राम
6.	मिश्री	-	10 ग्राम
7.	अखरोट गिरी	-	10 ग्राम
8.	अलसी	-	10 ग्राम

विधि –

- सभी को पीसकर बारीक करके, 6 ग्राम की 10 पुड़िया बना लें।
- एक पुड़िया हर रोज सुबह खाली पेट हल्के गर्म पानी से लेनी हैं और एक घंटे तक कुछ भी नही खाना है, चाय पी सकते हैं,
- ऐड़ी से लेकर चोटी तक की कोई भी नस बंद हो तो खुल जायेगी, दिल के रोगी भी ध्यान दे ये खुराक लेते रहे, पूरी जिंदगी हार्ट अटैक या लकवा नही हो सकता।

❖ आयुर्वेदिक देशी दारू

संतरा 100 ग्राम, तुलसी के पत्ते मिलाकर रस निकालें, 200 ग्राम अर्क मिलाओं। कांच की बोतल में भर लों, चीकू डालने से मीठा लगेगा। 15 दिन अच्छा रहेगा।

❖ आईड्रोप(नेत्रबिंदु)

घटक: -

1. मध - 100 मिलीलीटर
2. गुलाब जल - 200 मिलीलीटर
3. बछड़ी का मूत्र 7 परत कपड़े छान कर - 20 मिलीलीटर

विधि-

तीनो को आपस में मिलाये, ड्रोप को बोतल में भर लों।

❖ गेंग्रीन(असाध्य घाव) मरहम

घटक: -

1. देशी गेंदा फूल की पंखुडिया - 100 ग्राम
2. गौमूत्र धन पाउडर - 10 ग्राम
3. नीम पत्त पाउडर - 10 ग्राम
4. हल्दी - 10 ग्राम

विधि – सभी को बारीक पाउडर करके, गौमूत्र के साथ पेस्ट बनाए, दिन में दो बार घाव पर लगाये। दाद या सोरायसिस कितना भी पुराना चमड़ी रोग हो, वो भी ठीक हो जायेगा।

❖ नहाने का हर्बल साबुन

घटक: -

1. मुल्तानी मिट्टी - 1 किलोग्राम
2. आँवला (सूखा) - 100 ग्राम
3. नीम की हरी पत्तियाँ - 100 ग्राम
4. दही का मट्ठा - 250 ग्राम

5. नींबू का रस - 100 ग्राम
6. रीठा - 50 ग्राम
7. हल्दी - 25 ग्राम
8. सुंगध - इच्छानुसार

विधि –

- मुल्तानी मिट्टी को इमामदस्ते में बारीक कूटकर छान लें।
- 100 ग्राम नीम की पत्ती को 500 ग्राम पानी में उबालकर छान लें ताकि लगभग 400 ग्राम पानी प्राप्त हो जाये।
- 100 ग्राम आँवले को तैयार नीम के पानी में 12 घण्टे भिगोकर रख दें। तत्पश्चात् अच्छी तरह मथकर तथा छानकर आँवला पानी तैयार करें।
- 50 ग्राम रीठा को 100 ग्रम पानी में 12 घण्टे भिगोकर रख दें। तत्पश्चात् अच्छी तरह मथकर तथा छानकर रीठा झाग पानी तैयार करें।
- आँवले के पानी**,** रीठा झाग पानी को एक जगह मिला दें। इस घोल में मठ्ठा (अच्छई तरह मथी हुई दही) तथा हल्दी को डालकर अच्छी तरह मिला दें।
- तैयार घोल को मुल्तानी मिट्टी के साथ गूँथकर रख दें। 4-5 घण्टे बाद मिट्टी में 100 ग्राम नींबू का रस तथा रुचि के अनुसार सुगंधि डालकर पुनः अच्छी तरह गुँथाई करें।
- उपरोक्त तैयार सामग्री साँचे में डालकर अथवा हाथ से साबुन सूखने में मौसम के अनुसार 3 से 6 दिन तक लग जाता है।
- अच्छी तरह सूख जाने पर पैकिंग करें।

❖ वैदिक साबुन

1. मुल्तानी - 400 ग्राम
2. सोना गेरू - 250 ग्राम
3. चना बेसन - 150 ग्राम

4. हल्दी - 100 ग्राम
5. भीमसेन कपूर - 50 ग्राम
6. सफेद चन्दन पाउडर - 100 ग्राम
7. हरड़ छोटी **-** **50** ग्राम
8. फिटकरी - 10 ग्राम
9. एलोवेरा गुटा - 100 ग्राम
10. शुद्ध तेल - 100 ग्राम
11. गुलाब जल - 100 ग्राम
12. नीम तेल - 50 ग्राम
13. गौमूत्र - 50 ग्राम
14. गौदुग्ध - 50 ग्राम
15. गौदही - 20 ग्राम
16. गौधृत - 20 ग्राम
17. नींबू - 2 रस
18. रीठा - 100 ग्राम
19. शिकाकाई - 80 ग्राम
20. नीम पत्ते - 80 ग्राम

विधि –

200 मिलीलीटर पानी में गौमूत्र, रीठा, शिकाकाई, नीम उबाले, 150 मिलीलीटर बचे मिश्रण को छान लो, बाद में सभी को मिला ले, अब और पानी डालकर आटा गूथ लें, तेल लगा कर साँचे में डाले, दो दिन छाँव में सुखाये फिर धूप में 5 दिन रखें।

❖ शेविंग क्रीम

नारियल तेल और ऐलोवेरा जेल को आपस में मिलाकर बोतल में भर लें, हाथ में लेकर चेहरे पर लगाये।

❖ ऐलोवेरा फेसवॉश

500 ग्राम ऐलोवेरा, 5 नींबू और गुलाबजल को मिक्स करो और बोतल में भर दें।

❖ आफटर शेव

घटक: -

1.	गौमूत्र अर्क	-	500 मिली.
2.	पानी	-	500 मिली
3.	अमृतधारा	-	10 मिली

विधि –

सबको आपस में मिलाये और बोतल में बंद कर दें।

❖ हर्बल डेटोल

1 लीटर पानी में 100 ग्राम नीम पत्ते डाले उबाले, 800 मिली बचने पर छान ले, 200 ग्राम गौमूत्र सात परत सूती कपड़े में छान कर डाले, 10 ग्राम फिटकरी डाले और बोतल में भर लें।

❖ कामधेनु धूपबत्ती

घटक: -

1.	कामधेनु	-	1 किलो
2.	गीला गोबर	-	500 ग्राम
3.	खस लुगदा	-	200 ग्राम
4.	गाय का घी	-	200 ग्राम
5.	चावल आटा	-	200 ग्राम
6.	राल	-	250 ग्राम

7.	गौमूत्र	-	आवश्यकतानुसार

विधि-

सभी को आपस में मिलाकर, इन्जेक्शन सीरीज में जमा दे, 2 दिन सुखाये।

❖ धूपबत्ती (चंदन)

घटक: -

1.	गोबर	-	1 किलो
2.	नागर मोथा	-	50 ग्राम
3.	लाल चंदन	-	50 ग्राम
4.	जुरादा देवदार	-	50 ग्राम
5.	चावल आटा	-	50 ग्राम
6.	कपूर	-	50 ग्राम
7.	राल	-	50 ग्राम
8.	गौमूत्र	-	आवश्यकतानुसार

विधि –

सबको आपस में मिला कर धूपस्टीक बना लें।

❖ मसाला धूपबत्ती

घटक: -

1.	कपूर कायली बड़ी	-	200 ग्राम
2.	कपूर कायली छोटी	-	100 ग्राम
3.	हाउबेर	-	100 ग्राम
4.	सफेद चंदन	-	10 ग्राम
5.	गुलाब पुष्प	-	10 ग्राम

6.	गोबर	-	50 ग्राम
7.	गाय का घी	-	150 ग्राम

विधि –

सब मिला कर, धूप में सुखा दे, फिर साँचे में जमा दें।

❖ धूपदिया

घटक: -

1.	हवन सामग्री	-	500 ग्राम
2.	गोबर पाउडर	-	500 ग्राम
3.	मैंदा पाउडर	-	100 ग्राम
4.	लकड़ी पाउडर	-	500 ग्राम
5.	राई	-	100 ग्राम
6.	गवारगम	-	10 ग्राम
7.	पानी	-	आवश्यकतानुसार

विधि –

- अच्छे से मिलाये, पानी में डालकर रोटी जैसा गूंथ लें, गौ पूजन साँचे में जमा दे।
- 1 घटें बाद साँचे में डालकर निकाल लें।

❖ हवन कंडे-अग्निहोत्र

घटक: -

1.	गोबर ताजा	-	5 किलो

विधि -

- बेलन साईज से 10**mm** का लेपर बनाओं
- गौपूजन साँचे से 3 इंच के कन्डे बनाये।

❖ <u>मच्छर धूपबत्ती</u>

घटक: -

2.	ताजा गोबर	-	1 किलो
3.	कपूर	-	100 ग्राम
4.	नीगडी के पत्ते(नगाडे)	-	100 ग्राम
5.	नीम के पत्ते	-	100 ग्राम

विधि -

- पत्ते का चूर्ण कपड़े में छान ले, सबको अच्छे से मिलाये, **½** इंच मेटल की नली में 3 इंच लम्बी स्टी बना लें।
- सुखा कर पैकेट में भर लें।

❖ <u>मच्छर कोइल</u>

घटक: -

1.	गोमय पाउडर	-	500 ग्राम
2.	चारकोल पाउडर	-	200 ग्राम
3.	गवार गम	-	15 ग्राम
4.	नीम पत्ते पाउडर	-	100 ग्राम
5.	मैदा लकड़ी	-	100 ग्राम
6.	पाइन ऑयल	-	10 मिली
7.	नीम ऑयल	-	10 मिली
8.	सीट्रोनेला ऑयल	-	25 मिली
9.	गौमूत्र	-	500 मिली

विधि –

- गौ पूजन सांचे में कोईल बना लें।

❖ ऐंटी रेडियेशन चिप

घटक: -

1. गोमय पाउडर
2. गवार गम
3. डबल गम स्टीकर
4. पानी

विधि –

- गोमय पाउडर और गवार गम को मिलाकर बेलन से पतली 2 मिमी पतली रोटी बनाये
- 20-20 मिमी के वर्ग छुरी से काटो
- सुखाने के बाद डबल गम स्टीकर लगाये

लाभ – मोबाइल फोन पर चिपकाने से इलेक्ट्रॉन मेग्नेटीक रेडियेशन से बचाव होता हैं।

❖ झूम्मर

घटक: -

1.	गोमय पाउडर	-	1 किलो
2.	गवार गम	-	20 ग्राम
3.	वोटर कम्लर बॉक्स	-	12 कलरवाला

विधि –

- पाउडर और गम मिलाये, रोटी जैसा आटा गूंथे।

- साँचे से अलग – अलग रंग लगाये, धागे में पीराये, हो गया तैयार

नोट- पॉजीटीव वाइब्रेशन के लिए घर में लटकाये।

❖ चिड़िया घोसला

घटक: -

1.	गोमय पाउडर	-	1 किलो
2.	गवार गम(सुपर)	-	30 ग्राम

विधि –

साँचे में डाल कर पानी से गूंथा आटा अच्छे से दबाये, लोहे का तार साँचे में डाले, 7 दिन सुखाये।

❖ पूजा थाली

घटक: -

1.	गोबर पाउडर	-	1 किलो
2.	तालाब की मिट्टी	-	200 ग्राम
3.	गवार गम	-	20 ग्राम
4.	कलर पेंटिग के लिए		

विधि –

गौमूत्र में आटा गूंथे, साँचे में दबाये, निकाले, 7 दिन छांव में सुखाये।

❖ मच्छर स्प्रे

घटक: -

1.	नीम अर्क	-	1 लीटर
2.	अमृतधारा	-	10 मिली

विधि – दोनो को मिलाकर, स्प्रे बोतल में बंद कर दो।

❖ रूम फ्रेशनर

घटक: -

1.	गौमूत्र अर्क	-	1 लीटर
2.	पानी वाला सेन्ट	-	50 मिली

विधि – दोनो को मिलाकर, स्प्रे बोतल में बंद कर दो।

❖ लिपस्टीक

घटक: -

1.	बादाम तेल	-	2 चम्मच
2.	मोम(बी वेक्स)	-	1 चम्मच
3.	चुकन्दर का रस	-	2 चम्मच

विधि – तेल हल्का गर्म करे, मोम में डाले और अच्छे से मिलाये, फिर चुकन्दर का रस डाले, 3 घंटे फ्रिज में रखे।

❖ ब्लू कलर

घटक: -

1.	श्याही कलर	-	6 ग्राम
2.	गौमूत्र अर्क	-	750 मिली
3.	हाइड्रो क्लोरिक ऐसिड़	-	3 ग्राम
4.	**CMC**	-	3 ग्राम

विधि – सबको आपस में मिलाकर बोतल में भरे, स्याही वाले पेन में इस्तेमाल करें।

अन्य पुस्तक डाउनलोड़ या खरीदने के लिए सम्पर्क करें –

http://www.rajivdxt.com/